लखनऊ-कानपुर यूपी का पहला एक्सप्रेसवे जहां होगा ट्रामा सेंटर

एक्सप्रेसवे के दोनों ओर फूड प्लाजा, पेट्रोल पंप और चार्जिंग प्वाइंट की सुविधाएं मिलेंगी, प्रतिदिन दौड़ सकेंगे 40 हजार वाहन

अंशू दीक्षित • जागरण

लखनऊ: लखनऊ-कानपुर एक्सप्रेसवे प्रदेश का पहला एक्सप्रेसवे होगा, जहां दस बेड वाले ट्रामा सेंटर की सुविधा मिलेगी। यही नहीं, एक्सप्रेसवे के दाएं व बाएं छह-छह हेक्टेयर जमीन पर फूड प्लाजा, पेट्रोल पंप, इलेक्ट्रिक वीकल चार्जिंग प्वाइंट, सामुदायिक शौचालय, गेम जोन जैसी सुविधाएं भी मिलेंगी। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआइ) ने इसके लिए जमीन चिह्नित कर ली है और कार्यदायी संस्थाएं एनएचएआइ के अधीन रहकर इसका संचालन एक्सप्रेसवे चलने के दौरान शुरू कर सकती हैं। इस एक्सप्रेसवे को भविष्य की जरूरत के हिसाब से कभी भी छह से आठ लेन किया जा सकेगा। फिलहाल छह लेन के हिसाब से अगले 50 साल तक एनएचएआइ को बोलना नहीं पड़ेगा, सिर्फ समय-समय पर रखरखाव कराना होगा।

एनएचएआइ, लखनऊ के परियोजना निदेशक, कर्नल शरद चंद्र सिंह के मुताबिक, लखनऊ-कानपुर एक्सप्रेसवे के बायीं तरफ स्थित जरगांव (किमी 51.600) और दायीं तरफ स्थित शिवपुर ग्रांट (किमी 60.300) में वे-साइड एमेनिटीज लोगों को मिलेंगी। प्रतिदिन 40 हजार वाहन एक्सप्रेसवे पर चल सकेंगे। इस एक्सप्रेसवे पर चलने वाले प्रत्येक वाहनों पर नजर रखने के

लखनऊ-कानपुर एक्सप्रेसवे पर उन्नाव के नेवरना के पास तैयार ग्रीन फील्ड • जागरण

लिए पचास से अधिक ट्रैफिक मानीटरिंग कैमरा सिस्टम (टीएमसीएस) लगेंगे। उद्देश्य होगा कि लोगों की यात्रा सुरक्षित रहे। सीट बेल्ट, वाहनों की गति पर नजर रखने के लिए कंट्रोल रूम भी उसी छह एकड़ वाले परिसर में बनेगा। पुलिस चौकी स्थायी रूप से ट्रामा सेंटर के पास ही बनाई जाएगी और पेट्रोलिंग के लिए सुरक्षा कर्मी लगाए जाएंगे, जो पूरे एक्सप्रेसवे पर राउंड द क्लाक काम करेंगे।

सड़क का निर्माण मशीन कंट्रोल गाइडेंस सिस्टम से किया गया : एनएचएआइ के अधिकारी कहते हैं कि एक्सप्रेसवे के निर्माण में गुणवत्ता का पूरा ध्यान रखा गया है। भारी वाहन मानक के हिसाब से लोडिंग नहीं करते। इससे सड़कों की लाइफ प्रभावित होती है। फिर भी लखनऊ-कानपुर एक्सप्रेसवे को बनाने के दौरान मशीन कंट्रोल गाइडेंस सिस्टम (टीएमसीएस) की मदद ली गई है। इस प्रक्रिया के तहत पहले रोड को पूरी तरह से समतल करके बराबर किया गया है। इस प्रयास से भारी वाहनों के संचालन से एक्सप्रेसवे की सड़क दबेगी नहीं। प्रतिदिन चालीस हजार वाहनों का लोड एक्सप्रेसवे सह सके, कुछ इस तरह डिजाइन किया गया है। बरसात में पानी का भराव न हो, उसके लिए निकासी की व्यवस्था भी की गई है।

पंद्रह साल तक कार्यदायी संस्था करेगी रखरखाव : कार्यदायी संस्था पीएनसी के कंधों पर ही इस एक्सप्रेसवे के रखरखाव की जिम्मेदारी होगी, जो पंद्रह साल तक मुफ्त में करनी होगी। कहीं भी सड़क से जुड़ी कोई समस्या आती है तो पीएनसी के कर्मियों को उसे ठीक करना होगा। इसका कार्यालय भी अस्थायी रूप से ट्रामा सेंटर के आसपास रखा जाएगा।